सामाजिक विकास
(Social Development)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके जन्म की कल्पना समाज के बाहर नहीं की जा सकती। जन्म के पश्चात् उसके समाज का विस्तार होने लगता है। परिवार, पड़ौस, विद्यालय, समाज एवं संस्कृति के प्रभाव में वह सामाजिक गुणों को अर्जित करता है और विविध प्रकार के सामाजिक व्यवहारों को सीखता है। समाज का एक योग्य नागरिक (Citizen) बनने के लिए उसे स्वस्थ एवं सुन्दर समाजीकरण (Socialization) की आवश्यकता पड़ती है।

जन्म के समय शिशु न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक बल्कि वह समाज में प्रति उदासीन होता है। वह केवल एक जैविकीय प्राणी होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ उसमें सामाजिकता का विकास होने लगता है।

E.B. Hurlock के अनुसार, " There is a little evidence that people are born social, unsocial or antisocial and much evidence that they are made that way by learning. However learning to be social person does not come overnight."

बालक में सामाजिकता का विकास अनायास ही नहीं हो जाता है। सामाजिकता का विकास एक क्रमिक तथा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। बालक को प्राप्त होने वाले सामाजिक अनुभव के आधार पर सामाजिकता का विकास होता हैं।

हरलॉक के अनुसार, "कोई भी बालक सामाजिक पैदा नहीं होता है। वह दूसरों के होते हुए भी अकेला होता है। वह समाज में दूसरों के सम्पर्क में आकर समायोजन की प्रक्रिया सीखता है इसलिए सामाजीकरण की प्रक्रिया बालक के सामाजिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।"

सामाजिक विकास : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Social Development : Meaning & Definitions)

सामाजिक विकास का बालक के जीवन में विशेष महत्व है। सामाजिक विकास के माध्यम से ही बालक में उन गुणों का विकास होता है जो किसी सभ्य एवं सामाजिक व्यक्ति के व्यवहार में पाये जाते हैं। इसके विकास के द्वारा बालक में धीरे-धीरे सामाजिक व्यवहार सम्बन्धी परिपक्वता आती है। इसी कारण कहा जाता है कि जिसमें सामाजिक गुणों का विकास हो जाता है उसमें अन्य लोगों के साथ रहने के अतिरिक्त मिल-जुलकर काम करने की प्रवृत्ति भी प्रदर्शित होती है। **(Hurlock, 1970)**।

सामाजीकरण की प्रक्रिया बालक को समाज में रहने के लिए तैयार करती है क्योंकि इसके द्वारा ही बालक विभिन्न सामाजिक नियमों, रीति-रिवाजों, संस्कृति तथा अन्य सामाजिक गुणों को सीखता है।

वह अपने आस-पास के लोगों से परिचित होता है तथा अपने जीवन के मूल्यों (Values) तथा लक्ष्यों (Goals) को पहचानता है। इस प्रकार बालक के भीतर सामाजिक गुणों तथा व्यवहारों की उत्पत्ति ही सामाजिक विकास है।

Scanned with CamScanner

के अनुसार कार्य करने से है। बालक को अपने समूह, परिवार एवं [illegible] व्यवहार करने का प्रशिक्षण देना चाहिए। अनुरूपता से प्रशंसा प्राप्त होती है तथा बालक इससे प्रभावित होकर अपने व्यवहार में उचित परिवर्तन करता है।

(5) सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity)–समाज के मूल्यों, नियमों, आदर्शों तथा अभिवृत्तियों के अनुसार अपने सामाजिक व्यवहारों का प्रदर्शन करना ही सामाजिक परिपक्वता कहलाता है। सामाजिक अधिगम के लिए अवसर मिलते रहने से परिपक्वता का विकास सामान्य रूप से चलता रहता है। किसी बालक में सामाजिक परिपक्वता का विकास जितना अधिक होता है उसमें समायोजित व्यवहार करने की योग्यता भी उतनी ही अधिक होती है।

सामाजिक विकास के प्रतिमान
(Patterns of Social Development)

शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास की तरह ही सामाजिक विकास में भी अपने कुछ प्रतिमान होते हैं। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि बालक चाहे जिस किसी भी समाज, समुदाय या संस्कृति से सम्बन्धित हों, उनमें सामाजिक विकास के प्रतिमान समान रूप से पाए जाते हैं। प्रतिमानों का क्रम भी सभी बालकों में समान रूप से पाया जाता है। जन्म के पश्चात् शैशवावस्था से ही सामाजिक विकास की शुरूआत हो जाती है। सामाजिक विकास के इन प्रतिमानों के आधार पर यह आसानी से बताया जा सकता है कि एक निश्चित आयु स्तर पर बालक का सामाजिक विकास क्या होगा। बालकों में 4–5 माह की अवस्था से ही सामाजिक विकास होना प्रारम्भ हो जाता है। परन्तु तब यह अत्यन्त ही अस्पष्ट होता है। बाल्यावस्था में सामाजिक विकास की गति तीव्र होती है। जब बालक विद्यालय पढ़ने जाता है तब उसका सम्पर्क विद्यालय में अन्य छात्रों से होता है जो भिन्न–भिन्न वातावरण से आते है। उनके साथ वह खेलता है, पढ़ता है तथा काफी समय व्यतीत करता है। अत: उसका सामाजीकरण तीव्र गति से होता है। इसी कारण, इस अवस्था को ''सामाजीकरण की अवस्था (Age of Socialisation) भी कहते हैं। किशोरावस्था में बालकों में सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है। बालकों की आयु के अनुसार सामाजिक विकास के प्रतिमान में अन्तर भी देखने को मिलता है। इन विकास प्रतिमानों में आधार पर बालक में प्रशिक्षण की योजना बनाई जा सकती है। इस योजना के आधार पर बालक में इच्छित सामाजिक अभिवृत्तियों और सामाजिक कौशलों को उत्पन्न किया जा सकता है। जिन बालकों को सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने का जितना ही अधिक अवसर प्राप्त होता है, उनमें सामाजिक विकास उतना ही शीघ्र होता है। प्रतिभाशाली और अधिक बुद्धि वाले बालकों का सामाजिक विकास अपेक्षाकृत शीघ्र होता है।

विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास
(Social Development in Different Stages)

सामाजिक विकास एक क्रमिक क्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। यहाँ जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक विकास का वर्णन किया गया है–

दो वर्ष तक बालक का सामाजिक विकास
(Social Development of the Child upto 2 Years)

नवजात शिशु ज्यों ही अपने आसपास के वातावरण को समझने लगता है, यह सम्भावना है कि वह वातावरण में उपस्थित अन्य व्यक्तियों की ओर भी ध्यान देने लगता हैं। आचार शास्त्री (Ethologists) इस व्यवहार के उदय को आसक्ति (Attachment) कहते हैं।

बालक अपने वातावरण में उपस्थित व्यक्तियों की ओर ध्यान केन्द्रित करना तथा उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करता है। इसके साथ ही उन व्यक्तियों के साथ शारीरिक सम्पर्क रखना, उनके पास रहना चाहता है तथा उनकी प्रशंसा और अनुमोदन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। इसके विरुद्ध वह इन व्यक्तियों से दूर होना नहीं चाहता। यदि उसे इन व्यक्तियों से दूर किया जाये तो दु:ख का प्रदर्शन करता है। अनेक मनोवैज्ञानिक इन समाज अभिमुखी प्रतिक्रियाओं को पराश्रयता (Dependency) मानते हैं।

Scanned with CamScanner

शैशवावस्था के कुछ विशिष्ट सामाजिक व्यवहार

(Some Special Social Behaviours of Infancy)

लगभग दो वर्ष तक बालक विभिन्न सामाजिक अनुक्रियाएँ करने लगता है। इनमें से कुछ विशिष्ट सामाजिक व्यवहार निम्नलिखित हैं–

(1) **अनुकरण** (Imitation)–शैशवावस्था का यह प्रमुख सामाजिक व्यवहार है। बालक सबसे पहले मुखाकृतियों (Facial Expression) का, फिर हाव-भाव (Gestures) का, फिर भाषा (Language) का और सबसे अन्त में सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान का अनुकरण करना सीखता है। बालक अनुकरण द्वारा ही सामाजिक प्राणी बनता है।

(2) **आश्रितता** (Dependency)–शैशवावस्था में यह प्रवृति प्रमुख रूप से पायी जाती है। इस अवस्था में यदि बालक को अकेला छोड़ दिया जाये तो वह रोने लगता है। माँ यदि बालक को गोद में उठाये तो वह गोदी में आकर माँ के सीने से चिपट जाता है। इस प्रकार से व्यवहार उसकी आश्रितता की ओर संकेत करते हैं। इस अवस्था में बालकों पर जितना अधिक ध्यान दिया जाता है, वे उतना ही अधिक आश्रित हो जाते हैं।

(3) **ईर्ष्या** (Rivalry)–शैशवावस्था में बालकों की ईर्ष्या का संवेग प्रमुखता से उत्पन्न होता है। 7–9 माह के बालक में ईर्ष्या के भाव देखे जाते हैं। ईर्ष्या बालक में उस समय देखी जा सकती है जब उसके खिलौने किसी दूसरे बालक को दे दिये जायें।

(4) **सहयोग** (Co–Operation)—शैशवावस्था में जहाँ एक ओर ईर्ष्या की प्रवृति पाई जाती है, वहीं इस अवस्था के अन्त तक बालक में सहयोग की भावना का विकास भी होने लगता है। अब वह अपने खिलौनों को दूसरे बालकों के साथ मिलकर खेलता है।

(5) **शर्मीलापन** (Shyness)–यह शैशवावस्था का प्रमुख गुण है। बालक अपरिचितों को देखकर शर्माने की क्रियाएँ करने लगता है।

(6) **ध्यानाकर्षण** (Attention Seeking)–बालक शैशवावस्था से ही वयस्क व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए विशेष ढंग से आवाज निकालता है, कपड़े खींचता है, मारता है या जो काम करने के लिये मना किया जाता है, उन्हें करके वह ध्यान आकर्षित करता है।

(7) **अवरोधी व्यवहार** (Resistant Behaviour)–बालक में लगभग $1-1\frac{1}{2}$ वर्ष की अवस्था से ही अवरोधी व्यवहार की प्रवृत्ति शुरू हो जाती है। वह रोकर या अपने शरीर की कड़ा करने का विरोधी का प्रदर्शन करता है।

E. B. Hurlock के अनुसार, "During the middle of the 2nd year of life, resistant behaviour begins. It is expressed by tensing the body, crying and refused to obey. Unless babies are given opportunities to be independent resistant behaviour usually leads to negativism."

Scanned with CamScanner

पूर्व बाल्यावस्था में सामाजिक विकास

(Social Development During Early Childhood)

2 वर्ष के पहले बालक में सामाजिकता का अधिक विकास नहीं होता है। **मौड्री तथा नेक्यूला** (Maudry & Nekula, 1939) ने एक अध्ययन में पाया कि 9 माह में बच्चों में सामाजिक आदान-प्रदान नहीं होता है। 14 माह तक बालक अन्य बालकों अथवा व्यक्तियों की अपेक्षा अपने खिलौने तथा वातावरण की अन्य वस्तुओं को अधिक महत्व देते हैं। 14 माह से 18 माह तक धीरे-धीरे सामाजिकता के कुछ लक्षण बालकों में प्रकट होने लगते हैं। 25 माह में सामाजिकता प्रतिक्रियाओं में पर्याप्त वृद्धि होती है। इस अवस्था में अन्य बालकों के प्रति मैत्रीपूर्ण प्रतिक्रियायें प्रदर्शित की जाती हैं। 2 वर्ष की आयु के कुछ बालकों में सामाजिक संवेदनशीलता बहुत अधिक विकसित हो जाती है। अन्य बालक अथवा वयस्क यदि इन्हें अपने समूह से अलग कर दें तो रोकर अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करते हैं। कुछ बालक इस समय किसी विशेष बालक के लिए अपनी पसन्द का प्रदर्शन भी करने लगते हैं।

(1) सामूहिक व्यवहार का प्रारम्भ—2 वर्ष की आयु में सामान्य बालकों में सामाजिकता का विकास होने लगता है। इस आयु में दो या अधिक बालकों के मध्य सामाजिक आदान-प्रदान बहुत ही कम समय का होता है। 2 से 2.5 वर्ष की आयु के अनेक बालक एक साथ एकत्र होने पर एक दूसरे की उपस्थिति के प्रति सजग रहते हैं, परन्तु उनकी क्रियायें समानान्तर (Parallel) होती हैं। बालक एक साथ बैठकर अपने-अपने खेल में ही व्यस्त रहते हैं परन्तु आपस में मिलकर खेलना आरम्भ नहीं करते हैं।

3 वर्ष की आयु के बाद सामूहिक क्रियाओं में तीव्रता से वृद्धि होती है। सामाजिक व्यवहार के समय में भी वृद्धि होती है अर्थात् अब वे अधिक समय तक आपस में मिलकर सामाजिक क्रियायें करने लगते हैं। 5-6 वर्ष की आयु तक अक्सर बालक 5-6 बालकों के समूह में खेलना पसन्द नहीं करते हैं। सामान्यतया 3 से अधिक बालक एक साथ खेलना पसंद नहीं करते हैं। 6 वर्ष के बालक विभिन्न प्रकार के खेल में सामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं; जैसे—सहयोगिता, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, सहानुभूति, प्रतियोगिता, लड़ाई-झगड़े आदि।

(2) भाषा विकास तथा प्रारम्भिक सामाजीकरण—भाषा के विकास से बालक के सामाजिक विकास में तीव्र वृद्धि होती है। भाषा विकास के कारण बालक को सामाजिक सम्बन्धों को बनाने में सरलता होती है। **पियाजे** (1926) के अनुसार जैसे-जैसे बालक की आयु में वृद्धि होती है, उसकी भाषा की आत्म केन्द्रित प्रवृत्ति कम होती जाती है तथा वह अधिकाधिक समाज केन्द्रित होती जाती है। **म्यूलर** (Mueller, 1972) ने एक अध्ययन में पाया कि 4 वर्ष के बालक अपने सामाजिक व्यवहार में भाषा का बहुत अधिक उपयोग करते हैं।

(3) हमउम्र साथियों के लिए सहानुभूति—सामाजिक सम्बन्धों के विकास में सहानुभूति तथा सद्भाव की योग्यता का विकास महत्वपूर्ण है। जब बालक दूसरे व्यक्तियों के दुःख को देखकर समझ सकता है, उसके मन में उसके प्रति भाव तथा संवेग उत्पन्न होते हैं, जिसके आधार पर वह प्रतिक्रिया करने के योग्य हो जाता है, तभी सहानुभूति का विकास होता है। बालक की आयु वृद्धि तथा मस्तिष्क की परिपक्वता के साथ बालक यह योग्यता विकसित करता है।

मर्फी (Murphy, 1937) ने 2 वर्ष 4 वर्ष के बालशाला के बालकों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि बालक दुःख के प्रति विभिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं। बड़ी आयु के बच्चे छोटे बच्चों के दुःख को देखकर उन्हें आराम देने की कोशिश करते हैं, सहायता करते हैं तथा दुःख दूर करने की कोशिश करते हैं। छोटे बालक अन्य बालकों को दुःख तथा परेशानी में देखकर उनकी ओर स्थिर गति से देखते अथवा घूरते रहते हैं। कभी-कभी वे चिन्तित होकर उनकी परेशानियों के बारे में प्रश्न भी पूछते हैं।

मर्फी (Murphy, 1937) के अनुसार, बालकों में सहानुभूति की योग्यता अनेक तत्वों पर निर्भर करती है। यदि बालक अपने ही कार्यों में बहुत मग्न हो तो उनका ध्यान दूसरे बालकों के दुःख की ओर नहीं जाता है। कभी-कभी बालक अन्य बालकों के दुःख तथा परेशानी से भयभीत हो जाते हैं तथा उनके प्रति कोई सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं प्रदर्शित करते हैं।

मेकफर्लेण्ड (Mecfarland, 1938) के अनुसार, बालक का अपने हमउम्र साथियों के साथ सहानुभूति प्रदर्शन उनके आपसी सम्बन्धों के आधार पर निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, यदि बालक स्वयं अपनी ग़लती

Scanned with CamScanner

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

(Social Development During Adolescence)

किशोरावस्था में बालक सर्वांगीण परिपक्वता प्राप्त करता है। शारीरिक परिवर्तन के कारण उसकी अभिवृ में भी अन्तर आ जाता है। स्वयं को वह समझ नहीं पाता तथा समाज उसका स्वरूप स्वीकार नहीं कर पाता। परस्पर विरोधाभास उसके लिए तनावपूर्ण तथा समाज विरोधी हो सकता है। इस कारण से उसकी प्रतिष्ठा, परि मित्र समूह, समाज आदि में कम होती है। वह अपना स्थान निश्चित नहीं कर पाता।

किशोरावस्था में वह वयस्क व्यक्तियों की भाँति ही सामाजिक व्यवहार करता है। उसके प्रतिमान, कार्यप्र परिपक्व होकर सामाजिक प्रतिमान व मानकों के अनुरूप हो जाती है। उसका अधिकतर समय मित्र समू व्यतीत होता है। सामाजिक प्रतिक्रियाएँ विस्तृत होती जाती हैं।

किशोरावस्था की प्रमुख सामाजिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) सामाजिक परिपक्वता (Social Maturity)–सामाजिक परिपक्वता का अर्थ है– समाज के मू नियमों, अभिवृत्तियों, सामाजिक व्यवहार और सामाजिक भूमिका में परिपक्वता प्राप्त करना। उपरोक्त गुण कि किशोर में समाज की प्रत्याशाओं के अनुसार विकसित हुए हैं तो वह किशोर समाज की दृष्टि में पूर्ण रूपे सामाजिक रूप से परिपक्व माना जायेगा।

सामाजिक परिपक्वता के कारण वह किशोर सामाजिक मूल्यों, नियमों और भूमिका आदि में निष्ठा ही न रखते हैं बल्कि वह इन्हीं आधार पर समूह में व्यवहार करता है। ऐसे किशोर सामाजिक गतिविधियों में रुचि लेते हु सन्तोष व प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

वास्तव में बहिर्मुखी किशोरों में सामाजिक परिपक्वता प्रमुख अन्तर्मुखी किशोर की अपेक्षा अधिक पाय जाती है। सामाजिक परिपक्वता का विकास धीरे-धीरे आयु बढ़ने के साथ-साथ होता है। किशोर का कितन सामाजिक विकास हुआ है यह इसी आधार पर जाना जाता है।

(2) सामाजिक अनुरूपता (Social Conformity)–इसका अर्थ है किशोर का उसके समाज के मानकों, आदर्शों और मूल्यों के अनुसार व्यवहार करना। प्रत्येक सामाजिक समूह व समाज के अपने नियम, मूल्य, रीतियाँ, प्रथायें और परम्पराएँ आदि होती हैं। प्रत्येक समूह और समाज अपने सदस्यों से यह अपेक्षा करता है कि वे इन मूल्यों, नियमों के अनुसार व्यवहार करेंगे। किशोर द्वारा समाज में उतना ही वास्तविक सामाजिक व्यक्ति माना जाता है। किशोर के व्यवहार में जितनी अधिक सामाजिक अनुरूपता पायी जायेगी वह समाज में अच्छी दृष्टि से देखा जायेगा तथा समाज यह मानता है कि उनका सामाजिक विकास अच्छा हुआ है। सामाजिक विकास व सामाजिक अनुरूपता में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

(3) सामाजिक रुचियों का विकास–इस अवस्था के किशोर में सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने की रुचियों का विकास होता है। वे सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। विभिन्न सामाजिक संगठनों के सदस्य बनते हैं तथा बड़े उत्साह के साथ विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों को पूरा करते हैं।

(4) मित्रता (Friendship)–किशोरावस्था में मित्रों के चुनाव की कसौटी अपेक्षाकृत अधिक खरी होती है। इस अवस्था में मित्र बनने या बनाने से पहले अनेक व्यक्तित्व विशेषताओं को देखा जाता है। चूँकि इस अवस्था में बालकों में विपरीत लिंग के लोगों के प्रति रुचि बढ़ जाती है अतः मित्रों का चयन एक समस्या होती है। इस अवस्था के किशोर विपरीत लिंग के लोगों को मित्र बनाने के लिए बहुत अधिक लालायित होते हैं।

(5) समूह का सदस्य होना–किशोरावस्था के बालक विभिन्न समूहों के सदस्य बनते हैं अथवा कुछ किशोर मिलकर एक समूह का निर्माण करते हैं। इन समूह में वह सदस्य होते हैं जो स्कूल में कुसमायोजित होते हैं। इसमें अधिकतर एक ही कक्षा या विद्यालय के छात्र होते हैं।

(6) पारिवारिक सम्बन्ध–कोई बालक अपने परिवार के प्रति स्नेह और आदर रखता है। वह परिवार के सदस्यों के साथ मित्रवत व्यवहार करता है। पूर्व किशोरावस्था में किशोरों का माता-पिता से मतभेद रहता है किन्तु किशोरावस्था की समाप्ति तक पारिवारिक सम्बन्धों में सुधार आ जाता है।

Scanned with CamScanner